अलसाई चाँदनी

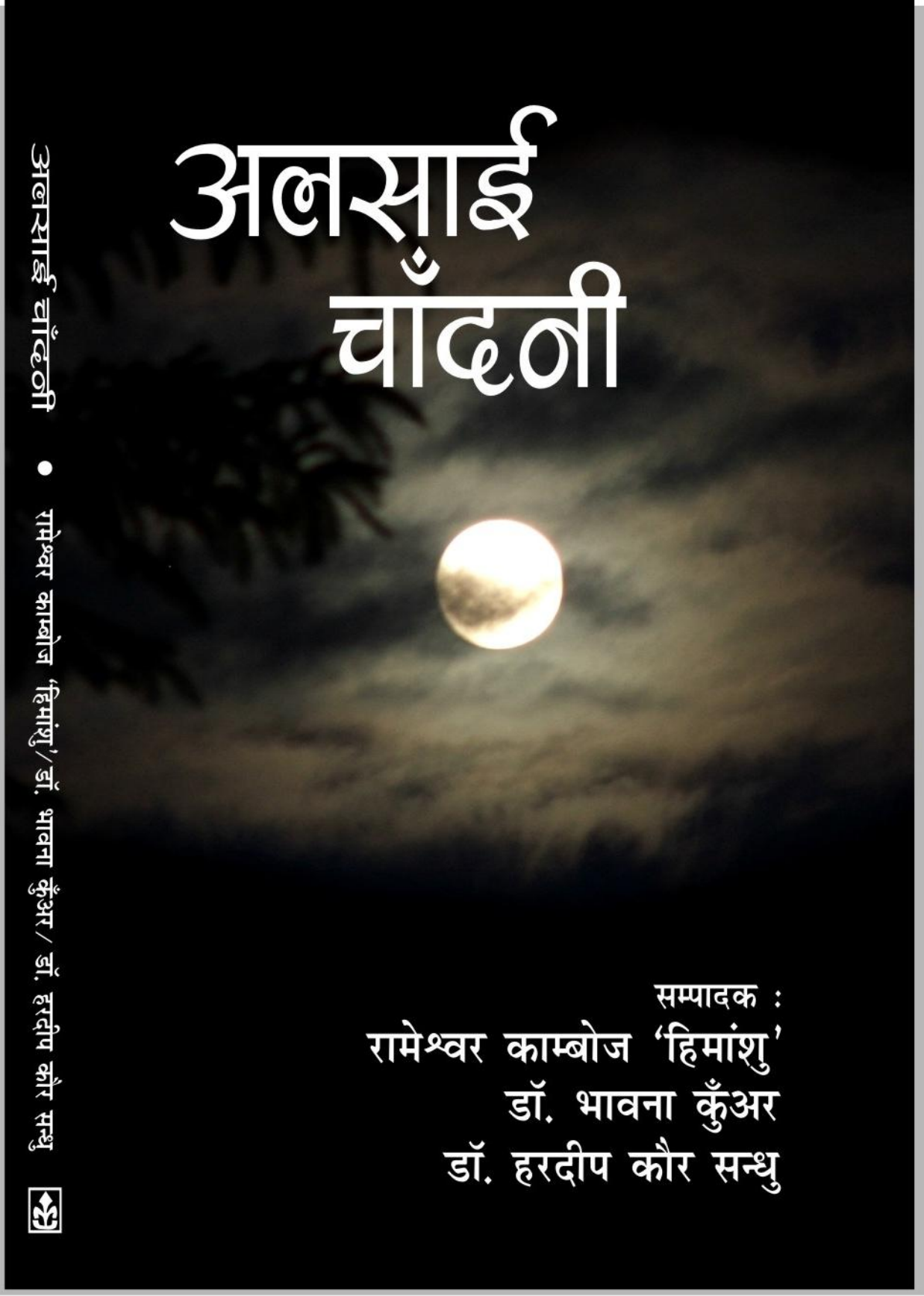

सम्पादक :
रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'
डॉ. भावना कुँअर
डॉ. हरदीप कौर सन्धु

अलसाई चाँदनी • रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'/डॉ. भावना कुँअर / डॉ. हरदीप कौर सन्धु

◆ कुछ खिलौने
उम्र छीन ले गई
कुछ वक़्त ने लूटे,
खाली हाथ हूँ
काश! कोई लहर
हथेली भर जाए!
- डॉ. सुधा गुप्ता

◆ हिरण बन
न जाने कहाँ गईं
वो प्यार भरी बातें!
छूटते अब
ज़हर बुझे बाण
जो हरते हैं प्राण।
- डॉ. भावना कुँअर

◆ चुप नदी से
पी लूँ दो बूँद पानी
बुझे प्यास रूहानी,
यूँ थामे हुए
लहरों का आँचल
मन बहता जाए।
- डॉ. हरदीप कौर सन्धु

◆ हज़ारों मिले
पथ में मीत हमें
चुपके से खिसके,
तुम-सा न था
साथ निभाने वाला,
लौटके आने वाला।
- रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

◆ इन तारों में
होगा छुपा उसका
नन्हा तारा भी कहीं,
सोचके यही
नभ तकती रही
सारी रात एक माँ।
- रचना श्रीवास्तव

अलसाई चाँदनी

(21 चर्चित कवियों के सेदोका)

अलसाई चाँदनी

(सेदोका-संग्रह)

सम्पादक :
रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'
डॉ. भावना कुँअर
डॉ. हरदीप कौर सन्धु

अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली

ISBN : 978-81-7408-

अयन प्रकाशन
1/20, महरौली, नई दिल्ली - 110 030
दूरभाष : 2664 5812 / 9818988613
e-mail : ayanprakashan@rediffmail.com

•

मूल्य : 180.00 रुपये

प्रथम संस्करण 2012 © रचनाकार

ALSAYI CHANDNI (Sedoka) Ed.by Rameshwar Kamboj 'Himanshu',
Dr. Bhawna Kunwar and Dr. Hardeep Kaur Sandhu

मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110093

अपनी बात

भोर में पक्षियों का मधुरिम स्वर, माँ से बिछुड़े बछड़े का रँभाना, चट्टानों के बीच से होकर बहते झरने का संगीत, हलकी-सी हवा में पीपल के पत्तों का ताली बजाकर हवा का अभिवादन करना, झरे हुए पत्तों की सरसराहट, बाँसों के टकराने की चुरचुराहट, पत्तों पर गिरती वर्षा की बूँदें, भूखी-प्यासी चिड़िया का खिड़की के पास आकर आवाज़ देना, सभी में एक लय है, संगीत है। इस लय को बाँधने का प्रयास प्रकृति के साथ जीवन-जगत् में भी किया जाता है। बाँधने का यह प्रयास हर पर्व पर कलावा बाँधने से लेकर विवाह-संस्कार में वर-वधू के आँचल और दुपट्टे के छोर को बाँधने तक चलता है। लय है- मिलाप या लगाव। यह लय जब नियन्त्रित हो जाती है, तो यही छन्द बन जाती है। जीवन में लय होना ज़रूरी है। भक्ति की लय ऊर्ध्व होकर लीन तक और अन्ततः ब्रह्मलीन तक विस्तार पाती है। लय टूटने का मतलब है- जीवन के छन्द में आत्मीय संवाद का अभाव। सृष्टि-प्रकृति किसी भौगोलिक सीमा को न जानती हैं और न ही मानती हैं। साहित्य से जुड़ा व्यक्ति यदि संकुचित भौगोलिक और क्षेत्रीय सीमाओं का दास है, तो वह कुछ भी हो, पर साहित्यकार नहीं होता। जाति, सम्प्रदाय, पद-मद की संकीर्णता सबसे पहले व्यक्ति की सहजता छीनती है, बाकी सब स्वतः विलीन हो जाता है। लय को जीवन्त करने वाले छन्द की इसी परम्परा में भारतीय छन्द के साथ-साथ हृदय की व्यापकता के कारण जापान में जो ताँका, चोका, हाइकु रचे गए, उनसे विश्वभर के सहृदय रचनाकार जुड़े। इन जापानी छन्दों की भाषिक रचना भारतीय भाषाओं (दक्षिण भारतीय भाषाओं को छोड़कर) को अपने बहुत नज़दीक लगी। आठवीं शताब्दी में सेदोका प्रचलित रहा। उसके बाद इसका प्रचलन कम होता गया। इसका स्थान ताँका आदि छन्दों ने ले लिया। 'सेदोका'

कविता प्रेमी या प्रेमिका को सम्बोधित होती थी। यह 5-7-7, 5-7-7 की दो आधी या अधूरी रचनाओं से मिलकर बनता था; जिसे कतौता कहा जाता था। ये दो आधी-अधूरी कविताएँ मिलकर एक सेदोका बनती थीं। *www.ahapoetry.com/* A Glossary Of Literary Terms के अनुसार-

'katauta – KAH-TAH-OU-TAH (J : side poem). An early verse form used in the Man'yoshû (an anthology of poetry) consisting of three parts with 5/7/7 sound units. When this form was doubled, it was called the sedôka.'

इन दो भागों में से पहला भाग 5-7-5 भी हो सकता था; लेकिन पहला भाग ताँका का हिस्सा होने के कारण 5-7-7 को ही आधार माना गया। ये दोनों भाग प्रश्नोत्तर रूप में या किसी संवाद के रूप में भी हो सकते थे। आठवीं शताब्दी के बाद इसका प्रयोग बहुत कम हुआ है। एक बात और महत्त्वपूर्ण है- 'कतौता का अकेले प्रयोग प्रायः नहीं मिलता। ये जहाँ भी आएँगे, एक साथ कम से कम दो ज़रूर होंगे। इसमें किसी एक विषय पर एक निश्चित संवेदना, कल्पना या जीवन-अनुभव होना ज़रूरी है। दो में से प्रत्येक कतौता अपनी जिस संवेदना को लेकर चलता है, वह दूसरे से जुड़कर पूर्णता प्राप्त करता है। विषयवस्तु का प्रतिबन्ध कतौता में नहीं है, कारण- यह किसी न किसी संवेदना से जुड़ी कविता है। इसे एक से अधिक अवतरण तक विस्तार दिया जा सकता है। इस संग्रह में डॉ. सुधा गुप्ता, हिमांशु, कमला निखुर्पा और कृष्णा वर्मा के क्रमशः अन्तिम पाँच, चार, चार छह सेदोका इसी प्रकार की रचना है।

एक प्रयोग के तौर पर हमने त्रिवेणी पर डॉ. सुधा गुप्ता, डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा और अपने कुछ सेदोका दिए थे। उस समय हमें आशा नहीं थी कि हमारे साथी रचनाकार और पाठक इसमें ज़्यादा रुचि दिखाएँगे। सप्ताह भर में ही हम तीनों का सोचना गलत निकला। डॉ. जेन्नी शबनम, रचना श्रीवास्तव, डॉ. अनीता कपूर, तुहिना रंजन, सुशीला शिवराण, कमला निखुर्पा, डॉ. मिथिलेश दीक्षित, प्रियंका गुप्ता, मुमताज टी एच खान, कृष्णा वर्मा, डॉ. सरस्वती माथुर, डॉ. उर्मिला अग्रवाल, प्रगीत कुँअर, शशि पाधा आदि कुछ और साथियों ने सेदोका भेजे। इनमें से कुछ के सेदोका तो उत्तम काव्य का उदाहरण लगे।

सेदोका आने का और बराबर जुड़ने का क्रम जारी था। हम तीनों साथियों ने निश्चय किया कि इसे पुस्तक रूप में लाया जाए। कारण- हमारे पास इतने सेदोका आ चुके थे कि सभी को त्रिवेणी पर छापना सम्भव नहीं था। सभी को इस संकलन में भी छापना सम्भव नहीं है। हिन्दी में सेदोका का अभी तक छुटपुट लेखन ही नज़र आया है; जिसमें विशेष काव्य-गाम्भीर्य दिखाई नहीं दिया। इसका मुख्य कारण है कि अभी तक इस शैली को गम्भीरता से नहीं लिया गया। सम्भव है अकवि इसको भी हाइकु और ताँका की तरह खर-पतवार से भर डालें। त्रिवेणी के रचनाकारों ने भावपूर्ण सर्जन की ओर विशेष ध्यान दिया है; जिसकी परिणति इस संग्रह के रूप में हुई है। देश-देशान्तर के 21 रचनाकारों के 326 सेदोका के साथ हम आपके सामने हैं । हिन्दी का यह पहला प्रयास है ।

http://trivenni.blogspot.in त्रिवेणी को सजाने के साथ-साथ निरन्तर अपने नवीनतम सेदोका भेजकर सभी रचनाकारों ने उत्साहित किया। इस यात्रा को शुरू करने में डॉ. भगवत शरण अग्रवाल जी और डॉ. सुधा गुप्ता जी ने अपना आशीर्वाद देकर हमारा मनोबल बढ़ाया है। दीदी डॉ. सुधा गुप्ता जी 'त्रिवेणी' का अवलोकन प्राय: करती रहती हैं और इस ब्लॉग को बेहतर बनाने में अपने उपयोगी और रचनात्मक सुझाव देती रही हैं। आपके दिशा-निर्देश और सुझावों के लिए हम बहुत आभारी हैं।

भाई भूपाल सूद जी के सहयोग के बिना भला यह पावन यज्ञ कैसे पूर्ण होता! इस पुस्तक को सुरुचिपूर्ण बनाने में आपका कई दशक का प्रकाशकीय अनुभव हमारे लिए सदैव सहायक रहा है। आपको कोटिश: धन्यवाद!

4 अगस्त, 2012

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'
डॉ. भावना कुँअर
डॉ. हरदीप कौर सन्धु

शुभकामनाएँ!

त्रिवेणी से एक ई मेल आई - 'जापानी छन्द सेदोका की तीन रचनाएँ भेज रहा हूँ। हमारी इच्छा है कि आप भी कुछ सेदोका लिख दीजिए, ताकि अगली पोस्ट पर हम हिन्दी में पहली बार सेदोका प्रकाशित कर सकें।' इसी के साथ तीन सेदोका दिए गए थे। अब इच्छा तो इच्छा!

ऐसे नि:स्वार्थ साहित्य-सेवियों, जिनका एकमात्र ध्येय अपने चारों ओर ही नहीं, वरन् विश्व में यत्र-तत्र सर्जनरत साहित्याराधकों को एकजुट कर, अन्तर्जाल पर 'हिन्दी हाइकु' और 'त्रिवेणी' ब्लॉग पर अभिव्यक्ति के लिए एक मंच देना और उनकी प्रतिभा को पाठकों के सामने लाना, जापान की काव्य शैलियों- हाइकु, ताँका, चोका और हाइगा के प्रति उनका आकर्षण, प्रचार-प्रसार हेतु परिश्रम सर्वविदित है। सेदोका से मैं परिचित थी; लेकिन इसमें रचना लिखने का आकर्षण कभी नहीं हुआ। सेदोका में 5+7+7-19 के दो खण्ड होते हैं। इन दोनों खण्डों की अन्तरंगता अनुस्यूत होती है। ये 5-7-7 वाले दो खण्ड मिलकर एक सेदोका बनाते हैं। एक खण्ड अधूरी कविता माना जाता है- यानी 'हाफ़ पोयम'। फिर डॉ. उर्मिला अग्रवाल के साथ मेरे भी और सेदोका मँगवाए। एक दिन फ़ोन पर एक धमाका- 'दीदी! निरन्तर प्राप्त होने वाले सेदोका गुणवत्ता में बहुत अच्छे हैं, अत: हम तीनों ने एक सेदोका संकलन निकालने का मन बना लिया है।'

तीनों की यह टीम सकारात्मक सोच वाली उत्साही टीम है। पिछले डेढ़ वर्ष में 'चन्दनमन' (हाइकु-संग्रह), 'भाव-कलश' (ताँका-संग्रह), 'मिले किनारे' (हिमांशु और डॉ. हरदीप सन्धु का ताँका और चोका), 'मेरे सात जनम' और 'धूप के खरगोश' क्रमश: हिमांशु, डॉ. भावना कुँअर के हाइकु संग्रह, 'यादों के पाखी' (हाइकु-संग्रह) के बाद अब 'अलसाई चाँदनी 'नामक

यह सेदोका संकलन! इस समाचार से हार्दिक प्रसन्नता हुई। इन तीनों साथियों का सभी सहयोगियों से मैत्री-भाव स्थापित कर, उनका त्वरित सहयोग प्राप्त कर लेना इनके नि:स्वार्थ साधक के भाव को दर्शाता है। भीड़ से हटकर निर्व्याज भाव से निरन्तर देने वाली सदाशयता कम ही लोगों में देखने को मिलती है।

'अलसाई चाँदनी' शीर्षक सेदोका पढ़कर लगा- जैसे कोई देवकन्या मोहक लास्य-भंगिमा में साकार हो उठी हो, जैसे निकुंज में बज उठी बाँसुरी के स्वर हवा में तिरते चले आ रहे हैं। सम्पादक त्रयी को अपनी संचित स्नेह-राशि और शुभकामना भेजते हुए यही कहूँगी कि अभी इन्हें हिन्दी-काव्य-जगत् के लिए बहुत काम करना है। हृदय की अशेष शुभकामनाओं के साथ-

- डॉ. सुधा गुप्ता
120 बी/2, साकेत
मेरठ - 250003

अनुक्रम

1.	डॉ सुधा गुप्ता	13
2.	रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'	21
3.	डॉ. भावना कुँअर	29
4.	डॉ. हरदीप कौर सन्धु	37
5.	डॉ. मिथिलेश दीक्षित	44
6.	डॉ. जेन्नी शबनम	51
7.	डॉ. अनीता कपूर	58
8.	रचना श्रीवास्तव	62
9.	डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा	65
10.	कमला निखुर्पा	70
11.	सुशीला शिवराण	73
12.	तुहिना रंजन	76
13.	डॉ. उर्मिला अग्रवाल	82
14.	शशि पाधा	83
15.	कृष्णा वर्मा	86
16.	मुमताज टी.एच. खान	91
17.	प्रियंका गुप्ता	93
18.	डॉ. सतीशराज पुष्करणा	96
19.	प्रगीत कुँअर	98
20.	मंजु मिश्रा	101
21.	देवेन्द्र नारायण दास	103

डॉ. सुधा गुप्ता

:: 1 ::
मेघ न आए
आषाढ़ बीत गया
सावन रीत गया,
विरह-व्यथा
यक्ष किसे सुनाए
कैसे भेजे सन्देसा?

:: 2 ::
बाग़ हरा है
फल-फूलों-भरा है,
है अकूत सम्पदा
बाग़बाँ भूखा
करता रखवाली
न मिले रूखा-सूखा।

:: 3 ::
पतझर में
वन-फूल खिला था
रंग-रूप मिला था
सही उपेक्षा
चलाचली की बेला
छूट गया अकेला।

:: 4 ::
विरही यक्ष
बैठा विरहाकुल
कुटज-पुष्प लिये
प्रतीक्षारत
मेघदूत आ जाए
तो सन्देश पठाए!

:: 5 ::
बड़े सवेरे
कोकिल कूक उठा
चहकी अमराई
चुपके से आ
सावन की फुहार
भिगो, चलती बनी।

:: 6 ::
सिकता-राशिः
बालक खेल रहा
घरौंदे बनाता है
जो रूप देता
कर लेती मंज़ूर
ज़रा नहीं गुरूर।

:: 7 ::
श्यामपट्ट पे
खड़िया से निकाले
ढेर सारे सवाल
थककेे चाँद
माँ की गोद जा सोया
अंक दमक रहे।

:: 8 ::
तूने क्या दिया?
रूखा-सूखा जीवन
संघर्ष प्रतिक्षण
फटी बिवाई
ख़ून रिसता गया
सफ़र जारी रहा।

:: 9 ::
कुछ खिलौने
उम्र छीन ले गई
कुछ वक़्त ने लूटे
ख़ाली हाथ हूँ
काश! कोई लहर
हथेली भर जाए।

:: 10 ::
हिम-यात्रा है
दुर्गम ये चढ़ाई
बर्फ़ में धँसी जाऊँ
सूरज खोया
बर्फ़ की आँधियों में
कुछ देख न पाऊँ।

:: 11 ::
मन-माफ़िक
कभी कुछ न हुआ
फली न कोई दुआ,
पिंजरे - क़ैद
भीगता रहा सुआ
धूप ने नहीं छुआ।

:: 12 ::
बूढ़ा पीपल
कामनाओं के धागों
बँधा-जकड़ा खड़ा
मन्नतों-लदा
याचना-भार-दबा
रात-दिन जागता।

:: 13 ::
चकोर-मन
चाँद को चाहकर
सदा ही छला गया
प्रेम-अगन
अंगार खा झुलसा
मिलन को तरसा।

:: 14 ::
मन मोहा था
मिसरी-सी आवाज़
रूप भी सलोना था,
एक पत्थर
दिल की जगह पे
रखके, ये क्या किया!

:: 15 ::
उसने मुझे
कोरे सफ़े दिये थे
क्या लिखूँ पता न था,
वक़्त चुका है
बड़ी शर्मिन्दगी, मैं
लौटाऊँ भी क्या, कैसे?

:: 16 ::
उम्र क़ैद है
बूढ़ी माँ की कोठरी
खुलते न कपाट,
बेमियाद ये
कितनी लम्बी डोर!
पाया ओर न छोर।

:: 17 ::
मलाल यही-
अनमोल ज़िन्दगी
कौड़ियों मोल बिकी
'रत्ती' का भाग्य!
बैठकर तराजू
हीरा-सोना तोलती।

:: 18 ::
नई सभ्यता
बस्ते का बोझ भारी
लूटा है बचपन
वंचक-तन्त्र
खो गई है मुनिया
बनैले जन्तु-वन।

:: 19 ::
मैना यूँ बोली-
सोने की सलाख़ों में
गीत मेरे रूठे हैं
मुक्ति दो मुझे
पंख फड़फ़ड़ाऊँ
प्रीत का राग गाऊँ।

:: 20 ::
आँख जो खोली
क्रूर साहूकारिन
ज़िन्दगी यूँ थी बोली-
'थमना नहीं
कर्ज़ अदायगी में'
उम्र तमाम हुई।

:: 21 ::
जोगी ठाकुर!
मीरा के पाँव तुम
घुँघरू बाँध गए,
मुड़के देखा?
रिसते रहे छाले
मीरा नाचती रही।

:: 22 ::
आशा के बीज
रेत में बोकर मैं
रोज़ सींचती रही
उगा न एक
समय, पानी, श्रम
बरबाद हो गए।

:: 23 ::
मेघों ने मारी
हँसके पिचकारी
भीगी धरती सारी
झूमे किसान
खेतों में उग आई
वर्षा की किलकारी।

:: 24 ::
दूल्हा आकाश
मुख पे सजा बैठा
मेघों का अंगराग
मिली सूचना-
आती नवोढ़ा प्रिया
छलका अनुराग।

:: 25 ::
कहाँ न खोजा
सात गाँव हो आई
छान मारे हैं वन
अब तो मिल
नदिया उफनाती
निगलने को आती।

:: 26 ::
हर युद्ध में
विजय मेरी हुई
सन्धि मेरी शर्तों पे
तुम समझे-
वो जीत तुम्हारी थी
अच्छी दिल्लगी रही।

:: 27 ::
मनमोहन!
तुम श्याम बरन
इन्दीवर लोचन
पीत वसन
वैजयन्ती-धारण
चिर आनन्द-घन।

:: 28 ::
ब्रज-नन्दन !
बंकिम चितवन
लूटे सबका मन
लगी लगन
दौड़ीं प्रेम-मगन
गोपियाँ 'निधि-वन'।

:: 29 ::
वंशी-वादन
तरु कदम्ब घन
पुलके तन
रोम-रोम कम्पन
अंशी-अंश-मिलन।

:: 30 ::
जगी अगन
मिटती न जलन
हर पल तपन
अन्तिम क्षण
मिलोगे, दो वचन
हो वैकुण्ठ-वरण। ❑

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

:: 1 ::
छुपा है चाँद
आँचल में घटा के
हुई व्याकुल रात
कहे किससे
अब दिल की बात
गिरे ओस के आँसू।

:: 2 ::
उमग पड़ी,
ख़ुशबू की सरिता
पुलकित शिराएँ।
'नहीं छोड़ेंगे'-
कहा जब उसने,
थीं महकीं दिशाएँ।

:: 3 ::
लहरा गया
सुरभित आँचल,
धारा बन करके,
बहे धरा पे
सुरभित वचन,
महका था गगन।

:: 4 ::
बीता जीवन
कभी घने बीहड़
कभी किसी बस्ती में
काँटे भी सहे
कभी फाक़े भी किए
पर रहे मस्ती में।

:: 5 ::
तुमसे कभी
नेह का प्रतिदान
माँगूँ तो टोक देना,
फ़ितरत है-
भला करूँ सबका
बुरा हो, रोक देना।

:: 6 ::
खाए हैं घाव
चलो उनको धो लें
दु:ख के पन्ने खोलें
करता है जी
गले से लगकर
जीभर हम रो लें।

:: 7 ::
हज़ारों मिले
पथ में मीत हमें
चुपके से खिसके
तुम-सा न था
साथ निभाने वाला
लौटके आने वाला।

:: 8 ::
राह हमारी
ये रोकेंगे सागर
फिर भी मिलना है,
तेरे दिल की
ख़ुशबू बनने को
फूलों-सा खिलना है।

:: 9 ::
पास जो बैठे
वे मीलों दूर रहे
उनसे क्या शिकवा!
माना हमसे
कोसों दूर हो तुम
फिर भी पास लगे।

:: 10 ::
पिघला चाँद
पर तेरे दिल की
पिघली नहीं शिला
दुनिया यहाँ
इक बाज़ार बनी
पर तू नहीं मिला।

:: 11 ::
ये मोड़ सभी
पाताली अँधेरे हैं
कहीं भी नहीं जाते
खड़े वर्षों से
तुम-सा कोई आता
गीत नया गा जाता।

:: 12 ::
शीतल जल
दो बूँद पिया जब
उनको नहीं भाया,
ज़हर पिया
जब भरके प्याला
वे बहुत मुस्काए।

:: 13 ::
झील का तट
बिखरी हो ज्यों लट
मचलतीं उर्मियाँ
पुरवा बही
बेसुध हो सो गई
अलसाई चाँदनी।

:: 14 ::
तोड़ती मौन
घास में छुपी हुई
टोकती टिटिहरी
झाँकते तारे
'झात' कह शैतान
सोते न रात भर।

:: 15 ::
दे नहीं पाए
सुख के दो पल भी
दीं दर्द की सौगातें,
यही बचा था
निर्मम दुनिया में
तेरे हिस्से में आया।

:: 16 ::
नेह था बाँटा
अँजुरी भर-भर
जीवन-घट रीता
प्यास लगी थी
दो घूँट जल माँगा
कुछ भी नहीं पाया।

:: 17 ::
मुक्त अलकें
बिखरी है ख़ुशबू
चन्दनी हवाओं की,
अधरों पर
थिरकी मधुरिमा
पावन ऋचाओं की।

:: 18 ::
फूटी किरनें
सुरमई साँझ भी
रूपसी बन गई
लौटेंगे सब
माना नीड़ में पाखी
ये पल न लौटेंगे।

:: 19 ::
कुरेदो नहीं
तुमने जो दिए थे
घाव हुए गहरे,
कैसे सुनेंगे
हाल मेरे मन का
जो जन्म से बहरे।

:: 20 ::
एकाकी मन
सरहदों के पार
ढूँढ़ता रहा प्यार,
उठी नज़र
जो घर-आँगन में,
उनको वहाँ पाया।

:: 21 ::
हज़ारों ख़्वाब
माना पूरे न होंगे
दो-चार तो होंगे ही,
जीना जो चाहो
सपनों को कभी यूँ
मरने नहीं देना।

:: 22 ::
बोती मुस्कान
अलसाई चाँदनी
भीगे धारा-गगन,
व्याकुल झील
घूँट-घूँट पी रही
करके आचमन।

:: 23 ::
माथा तुम्हारा
मेघमाला से झाँके
ज्यों चाँद का टुकड़ा,
चाँद में दाग़
बिखरे जहाँ पर,
नभ में छोड़ आया।

:: 24 ::
मेरे ही नाम
अपने नयनों का
तुम पानी कर दो,
मैं सींच दूँगा
मन का उपवन
खिल जाएँगे फूल।

:: 25 ::
कुछ तो ख़ता
तुमने भी की होगी
जाने या अनजाने,
लौटते न यूँ
बिना दुत्कारे कभी
किसी द्वारे से जोगी।

:: 26 ::
मैं मजबूर
कि सिर झुकता है
तेरे दर पे आके,
तू ही बता दे-
किस मुँह से भला
मन्दिर अब जाऊँ।

:: 27 ::
तपती शिला
निर्वसन पहाड़
कट गए जंगल
न जाने कहाँ
दुबकी जलधारा
खग-मृग भटके।

:: 28 ::
झीलें हैं सूखी
मिला दाना न पानी
चिड़िया है भटकी
आँखें हैं नम
लुट गया आँगन
साँसें भी हैं अटकी।

:: 29 ::
घाटी भिगोते
रहे घन जितने
वे परदेस गए
रूठ गए वे
निर्मोही प्रीतम-से
हुए कहीं ओझल।

:: 30 ::
जो भी सपने
फ़सलों-से उगे थे
निर्दय तोड़ गए,
सिद्धार्थ जैसे
यशोधरा-सी धरा
बादल छोड़ गए। ❑

डॉ. भावना कुँअर

:: 1 ::
पल भर में
टूटकर बिखरे
सुनहरे सपने
किससे कहूँ
घायल हुआ मन
रूठे सभी अपने।

:: 2 ::
हिरण बन
न जाने कहाँ गईं
वो प्यार भरी बातें
छूटते अब
ज़हर बुझे बाण
जो हरते हैं प्राण।

:: 3 ::
मन का कोना
ख़ुशबू नहाया-सा
सुध बिसराया-सा,
न जाने कैसे
भाँप गया ज़माना
पड़ा सब गँवाना।

:: 4 ::
प्रातः-किरण
कह जाती चुपके
कुछ प्यारे से छंद,
छलिया हवा
आहट बिन आती
भाव चुरा ले जाती।

:: 5 ::
लड़ती रही
जीत की उम्मीद में
लहरों से हमेशा
यूँ फेंकी गई
भँवर के भीतर
चकराती ही रही।

:: 6 ::
खोते हैं हम
ज़्यादा की चाहत में
दामन की ख़ुशियाँ
गुज़रे वक़्त
रह-रह रुलाएँ
साजन की बतियाँ।

:: 7 ::
प्रेम का घर
बड़े अरमानों से
बनाया था हमने,
चढ़ गया वो
ले गाजे-बाजे संग
अहं की वेदी पर।

:: 8 ::
किये थे वादे
निभाएँगे जीवन
बस तुम ही संग,
मगर टूटा
झूठा प्यार का भ्रम
हिस्से में आया ग़म।

:: 9 ::
तेरी चाहत
कुछ कम तो न थी
क्यूँ छोड़ा आशियाना?
सूझी क्या मुझे
जो ढूँढकर लाई
निष्ठुर-सा घराना!

:: 10 ::
तुम तो न थे
पत्थर-से कठोर
तोड़ते मेरी चुप्पी,
तुम्हारा मन
यूँ देता था आवाज़ें
हो जाते थे विभोर।

सेदोका 13-
मजबूरी में
नुक्ता नहीं
होता। कृपया
कन्फर्म करें।

:: 11 ::
अरमानों पे
नुकीली औ दुधारी
चलाते गए आरी
ज़हर-बुझी
तुम्हारी ये बतियाँ
सुनकर मैं हारी।

:: 12 ::
बेबस हम
भटकाती ही रही
वो यादों की सुरंग
तड़पे हम
गुज़रा हुआ वक़्त
पाने को हरदम।

:: 13 ::
तोड़ता कौन
तिनका-तिनका जो
जोड़े गए घरौंदे
जानते सभी
कैसी ये मजबूरी
जो सभी बैठे मौन।

:: 14 ::
कड़ा पहरा
यादों की बस्तियों में
छोड़े चिंगारी कौन?
अरमानों को
जला राख करती
देखती खड़ी मौन।

:: 15 ::
काटे न कटें
पिया बिन ये रातें
मुश्किल हुआ जीना
पुकारे पीहू
करें किससे हम
दर्द-लिपटी बातें।

:: 16 ::
तेज तूफ़ान
है ढूँढती आसरा
वो नन्ही-सी गौरैया
बचाए कैसे
इस मुश्किल घड़ी
अपने नन्हे प्राण।

:: 17 ::
पुराने दिन
रंगीन तितली-से
मँडराते फिरते
मन का कोना
खिल-खिल उठता
ख़ुशबू से भरता।

:: 18 ::
करने चली
मंज़िल की तलाश
भटक गई रस्ता
अजनबी ने
पकड़ा जब हाथ
तो खो गई मंज़िल।

:: 19 ::
दिल - दीवार
रह-रह सिसकी
अपने में सिमटी
मन का द्वार
करे है इन्तज़ार
गुम हुई आवाज़।

:: 20 ::
जाऊँ कहाँ मैं?
अड़कर खड़ी है
ज़माने की दीवार
थे जो अपने
करते वही अब
गहराई से वार।

:: 21 ::
बिखरी चीज़ें
हैं दिला रही याद
बीते हुए पलों की
सँभाले रखीं
यादों की टहनियाँ
प्रेम न रख पाए।

:: 22 ::
धूप-सी खिली
अँधेरों को चीरती
वो मोहक मुस्कान
हर ले गई
ग़मों के पहाड़ को
मिला जीवन-दान।

:: 23 ::
सदा रही मैं
भावनाओं से भरी
आज पाहन बनी
बनाते गए
अपनों के कटाक्ष
मुझे ऊँचा पहाड़।

:: 24 ::
बोले न कोई
पंछियों के नीड़ों को
है तोड़ गया कौन
नन्हे चूज़ों को
पुकार रही है माँ
न जाने क्यूँ वो मौन?

:: 25 ::
आज हवा में
कुछ अलग-सी ही
बात लगी है मुझे
बीते वक़्त की
भूली हुई यादों की
सौगात लगी मुझे।

:: 26 ::
यादों में जीना
मेरे दिल का बोझ
बेहिसाब बढ़ाए
थामे जो हाथ
जो लगे अपना-सा
वो सामने तो आए।

:: 27 ::
दहला गया
सोचों में ही मरना
इस कदर तुम्हें
चली जाऊँगी
असल ज़िंदगी में
तब जिओगे कैसे?

:: 28 ::
बेचैन फिरें
इधर-उधर ये
बेबस मछलियाँ
तोड़ न पाएँ
शीशे-बनीं दीवारें
व्याकुल टकराएँ।

:: 29 ::
छिपते फिरें
मन के खरगोश
पढ़ जाए दुनिया
सँजोती आँखें
आँसुओं के सैलाब
मोती सोचे दुनिया।

:: 30 ::
ज़िद्दी तूफ़ान
उड़ाकर ले जाए
छप्पर और छान
सीने लगाए
बैठी रातभर माँ
काँपे नन्ही-सी जान। ❑

डॉ. हरदीप कौर सन्धु

:: 1 ::
टिमटिमाते
तारों-भरा अम्बर
जोड़कर खाट को
छत पे सोएँ
ठण्डी-ठण्डी हवाएँ
ज्यों लोरियाँ सुनाएँ।

:: 2 ::
गाँव की गली
हाँक दे बनजारा
रंगीन चूड़ियाँ लो!
पहने गोरी
नाज़ुक कलाई में
छन-छन छनकी।

:: 3 ::
मृग-नयन
धारीदार काजल
ज्यों आँज मटकाए,
खिलता जाए
चाँद-सा ये मुखड़ा
ओढ़े हुए चाँदनी।

:: 4 ::
ठण्डी फुहारें
सुरमई बादल
आए लेके संदेसा
आ गई वर्षा
पुलकित है धरा
अम्बर भी मुस्काया।

:: 5 ::
चुप लहरें
साथ अपने लाईं
हँसी खिलखिलाती
मन एकाकी
फूल-सा खिल जाए
गीत गुनगुनाए।

:: 6 ::
चुप नदी से
पी लूँ दो बूँद पानी
बुझे प्यास रूहानी,
यूँ थामे हुए
लहरों का आँचल
मन बहता जाए।

:: 7 ::
याद हैं दिन
जब माँ के आँगन
सपने थे उगते
जी चाहता था-
उड़ूँ दूर गगन
बिन पंख लगाए।

:: 8 ::
दूरी न रही
मंज़िल थी सामने
कोई रास्ता न मिला
ढूँढते रहे
ताउम्र, हमें कोई
रहनुमा न मिला।

:: 9 ::
बूँद - कतरा
लिये हुए तूफ़ान
अम्बर से गिरती
मिलतीं बूँदें
अगर नदिया से
धारा बन बहती।

:: 10 ::
बिन पत्तों के
वृक्ष खड़े उदास
कोई नहीं है पास
धूप बसंती
हरी कोंपलों-बुनी
पोशाक पहनाती।

:: 11 ::
यह जीवन
फूलों सजी ओढ़नी
रंगीन फुलकारी
सुख खिलता
कभी दु:ख मिलता
खेल तमाशा जारी।

:: 12 ::
धुँधलके में
दूर गाँव से चली
टमटम यादों की
धुंध गायब
दिल के द्वार खुले
विस्मिय में है आत्मा।

:: 13 ::
मेरी ये आत्मा
यूँ कतरा-कतरा
बनकर बिखरी
गाँव की गली
पीड़ा- दर्द- जुदाई
साथ ही चली आई।

:: 14 ::
बन सितारे
यादों की चूनर में
टिमटिम टिमके
गाँव-आँगन
ओढ़कर चुनरी
दिल गाए ठुमरी।

:: 15 ::
हमारा जिस्म
है आत्मा का रबाब
ये देखना है हमें
कैसे बजाएँ
बेसुर हम गीत
या सुरीला संगीत।

:: 16 ::
तुम मौसम
सर्दी में नाराज़गी
हो ऋतु बसंत से,
दिल के कोने
तुम्हारा ये बसंत
मस्ती में मुस्कराए।

:: 17 ::
रमता योगी
नई-नई राहों पे
यूँ ही चलता जाए
नया सूरज
उगता प्रतिदिन
नए-नए आँगन।

:: 18 ::
चली है आई
मेरे गाँव की हवा
यूँ मस्त झूमे गाए
मुझे सुनाए
पायल का संगीत।
त्रिंजण-मधुगीत।

:: 19 ::
शरद भोर
खेले धूप मुँडेर
काढ़नी उबलता
माँ के आँगन
दूध धीरे-धीरे से
उड़ रही खुशबू।

:: 20 ::
बोए सपने
ज्यों सींचे उमीदों से
मन-आँगन खिले
लगें अपने
उड़ चला ये मन
बिन पंख लगाए।

:: 21 ::
सूर्य की ओर
तुम चलो अगर
रोकेगी नहीं रास्ता
परछाई भी
कदम से कदम
हवा संग तू मिला।

:: 22 ::
एक भी पत्ता
पीला हो मुरझाए
डाली से टूट जाए,
जान ले हाल
भीतर ही भीतर
पेड़ बहुत रोए।

:: 23 ::
घर थे कच्चे
सब लोग थे सच्चे
हिल-मिल रहते
साथ निभाते
जीवन का शृंगार
बरसता था प्यार।

:: 24 ::
आया अकेला
देखने यह मेला
मिला साथ सुहाना
हँसा ज़माना
मेले में घूम-घूम
ढूँढा सुख-खिलौना।

:: 25 ::
मैं प्यासा राही
जीवन-सागर से
भरता रहा प्याले,
प्यास बुझाऊँ
सागर भी शामिल
शामिल जग वाले।

:: 26 ::
मेरी ये आत्मा
रंगीला उपवन
रंगीन तितलियाँ
मोह में रँगी
उड़ती यहाँ-वहाँ
खिलीं आशा कलियाँ। ❑

डॉ. मिथिलेश दीक्षित

:: 1 ::
बूँद-बूँद से
झरकर ममता
भर देती गागर,
उर-सरिता
ऐसी गति पाकर
आज हुई सागर!

:: 2 ::
किस्से हमारे
हरेक शहर के
हिस्से में आते रहे
जो ठहर के,
अब तक पिए हैं
वे प्याले ज़हर के।

:: 3 ::
बिना बुलाए
दल-बल लेकर
घूम रहे बादल,
दिशावधू के
नयन हँस रहे
लगा-लगा काजल।

:: 4 ::
ढूँढ रहा है
बचपन मुझको,
मैं भी ढूँढूँ उसको,
छूट गए हैं
सपन मनोहर
याद करूँ किसको!

:: 5 ::
डाली लिपट
मनोहर लतिका
झूम-झूम मुस्काए,
माँ की ममता
तब-तब मुझको
याद बहुत आए।

:: 6 ::
फैले ख़ुशबू
सभी तरफ यदि
रखें नया कदम,
क्यों न खिला दें,
मन-उपवन में
कोई नया सुमन!

:: 7 ::
चन्द लोगों ने
जिनकी आबरू को
है तार-तार किया,
सच बताऊँ,
मैंने उन फूलों से
हमेशा प्यार किया!

:: 8 ::
सागर जैसा
मुझे प्रेम मिला है
सच्चा और रूहानी,
नहीं चाहिए
किसी ताल का मैला,
रुका, गँदला पानी!

:: 9 ::
भरा हुआ है
धन-पद-वैभव
पर हैं रीते खाते,
रीति यही है,
रीते होकर आते
रीते होकर जाते!

:: 10 ::
वचनों-पंथों
मत-उपदेशों से
मति भर ली सारी,
मन है खाली,
तन-मन-धन का
यही बोझ है भारी।

:: 11 ::
काँटों का पंथ
भाव तेरा न मेरा
नहीं घर, न डेरा,
पंथी अकेला
चल देता फिर भी
चीर कर अँधेरा!

:: 12 ::
चुभा उजाला
धधक रही कैसी
धरती पर ज्वाला,
हमने देखा
इच्छाओं का उभरा
ऐसा दृश्य निराला!

:: 13 ::
यह शहर
है ईंट-पत्थर का
यहाँ कोई न घर,
बुत खड़े हैं,
जी रहे इंसान को
है ढूँढती नज़र!

:: 14 ::
होने लगेगी
बरसात अगर
आग और बम की,
बताएँ आप,
कैसे रह पाएँगे
आप और हम भी!

:: 15 ::
डरा जलद
जल बरसाने को
पृथ्वी पर आने को,
रही तड़प
मछली ही जल में
जीभर जी पाने को!

:: 16 ::
खोलके पर
तिरने लग जाते
विहग जल पर,
हमने देखा-
निहारे हैं सुमन
कैसे मुस्कराकर!

:: 17 ::
बाँध रूढ़ियाँ
यह आज की पीढ़ी
रोज़ जीती-मरती,
नई वस्तु को
नए-नए रूपों में
भर देती धरती!

:: 18 ::
धूम मचाती
आईं जो भी ख़ुशियाँ
मेरे बचपन में,
ख़ूब लुभातीं
यादें बन छा जातीं
मेरे इस मन में!

:: 19 ::
निश्छल मन
मृदु-सुन्दर तन
मोहक चितवन,
लो, यह देखो
स्मृतियों का झूला है
झूले में बचपन!

:: 20 ::
कर्मशील ही
प्राप्त करेगा फल
कर भावी उज्ज्वल,
लक्ष्य मिलेगा,
आज नहीं तो कल
आएगा वह पल!

:: 21 ::
कोई भी छत
प्यार या विश्वास की
सर पर नहीं है,
बहुत ऊँचा
क़िला आलीशान है,
पर घर नहीं है।

:: 22 ::
सृजन क्या है ?
प्रेम के संसार का
प्रकटीकरण है
प्रेम तो बस
धर्म के शब्दार्थ का
सरलीकरण है।

:: 23 ::
रागिनी सुन
सरल-सुमधुर
मदिर रुनझुन
एक ही धुन
अलख अनहद
मन ही मन गुन।

:: 24 ::
आकृति पाई
सुखद-सुकोमल
जब-जब मन ने,
जान डाल दी
तब-तब प्रभु ने
जान लिया हमने।

:: 25 ::
ईश्वर-कृपा
और माली का श्रम
रहते जब संग
रूप त्रिभंग
फूलों के अंग-अंग
खिल पड़ते रंग।

:: 26 ::
बड़े जहाज़
डूबते कई बार
बीच ही मझधार
छोटी-सी नाव
नहीं मानती हार
किया करती पार। ❑

डॉ. जेन्नी शबनम

:: 1 ::
मन की पीड़ा
बूँद-बूँद बरसी
बदरी से जा मिली
तुम न आए
साथ मेरे रो पड़ीं
काली घनी घटाएँ!

:: 2 ::
तुम भी मानो
मानती है दुनिया-
ज़िन्दगी है नसीब
ठोकरें मिलीं
गिर-गिर सँभली
ज़िन्दगी है अजीब!

:: 3 ::
एक पहेली
उलझनों से भरी
किससे पूछें हल?
ज़िन्दगी है क्या
पूछ-पूछके हारे
ज़िन्दगी है मुश्किल!

:: 4 ::
ओ प्रियतम!
बनके प्रेम-घटा
जीवन पे छा जाओ
प्रेम की वर्षा
बरसे निरंतर
जीवन में आ जाओ!

:: 5 ::
काला सूरज
जल-जलके देता
है नर्म-गर्म धूप,
सूरज लाल
सबसे सुना, पर
चक्षुहीन क्या जाने?

:: 6 ::
खेतों में जाए
जब होता बिहान
हल लेके किसान
दिशाएँ गूँजें
बैल की घंटी बजे
ज्यों मन्दिर का गान!

:: 7 ::
घुँघरू बजे
रुनझुन कहके
किसान मुस्कुराए,
खुशियाँ नाचें
खेत लहलहाए
चहके खलिहान!

:: 8 ::
पेट भरता
सारे संसार का वो
ख़ुद भूखा सो जाए
तरस जाए
अन्न के दाने को जो
अनाज उपजाए!

:: 9 ::
भूखा किसान
बिलबिलाते बच्चे
नहीं रहा उपाय
पाए निजात
करके पलायन
छोड़े जग-संसार!

:: 10 ::
अँजुरी-भर
चुरा लूँ मैं चाँदनी
गर चाँद जो दिखे
ज़रा-सा चखूँ
अधरों पे सजा लूँ
गर चाँद जो कहे!

:: 11 ::
भूल-भुलैयाँ
ज़िन्दगी उलझन
खो जाती है डगर
बाहर जाना
तभी है मुमकिन
जब छोड़ें निशान!

:: 12 ::
प्रीत न माने
जात की परिभाषा
प्रीत कहाँ समझे
वर्ण की भाषा
मन मिल जाए तो
हो पूर्ण अभिलाषा!

:: 13 ::
कन्या-जीवन
हज़ारों प्रतिबन्ध
ये कैसा अनुबंध
जग का ज्ञान
विरासत में पाया
जैसे लिया जनम!

:: 14 ::
फर्श से अर्श
पहुँच गए वहाँ
संतुलन बनाओ
ज़रा-सा अहं
पटकेगा ज़रूर
अर्श से फ़र्श पर!

:: 15 ::
अग्नि-परीक्षा
दे-दे कर है हारी
ये है कैसी लाचारी ?
युग बदला
कब तक सहना?
अब हुंकार भरो!

:: 16 ::
तुम्हारी यादें
दिल में यूँ दफ़न
ज्यों मन-पिरामिड
युग गुज़रे
रहेंगे अवशेष
सदैव सलामत!

:: 17 ::
कस्तूरी-गंध
पाने को मृग चाहे
चहुँ ओर निहारे
नहीं वो जाने
उसमें बसी गंध
वन-वन भटके!

:: 18 ::
रंग-बिरंगे
सुन्दर सुनहरे
सपने यूँ सजाए,
फूलों की क्यारी
हमारे सपनों की
देख मन हर्षाए!

:: 19 ::
दु:ख की वेला
कोई नहीं अपना
किससे आस करें?
सभी बेगाने
जो थे कभी अपने
कोई न पहचाने!

:: 20 ::
सुनो पथिक!
ठहरना न कभी
पथ भले दुर्गम
सीखा जिसने
चलते ही रहना
मिलती है मंज़िल!

:: 21 ::
बादल हठी
न बरसे न उड़े
अजब है तमाशा
उगा सूरज
चुपचाप निहारे
बादलों का तमाशा!

:: 22 ::
चंचल आँखें
आँसुओं से हैं भरी
तक़दीर को कोसें
सिर का साया
हैवानों ने था छीना
लूटा है बचपन!

:: 23 ::
उड़ न जाए,
कपूर-सी सुगंध
ख़ुशियाँ होतीं गंध
रोक लो उन्हें
ज़रा-सी मिन्नत से,
मिलेंगी न दुबारा।

:: 24 ::
एक चितेरा
लूट ले गया मन
कहाँ ढूँढ़ें उसको?
दिल नादान
बौराता ही रहता
भेजो उसे सन्देश!

:: 25 ::
मन बौराए
समझ भी न पाए
जाने कैसा है रोग?
कोई तो बता
इस मर्ज़ की दवा
इश्क बड़ा सताए!

:: 26 ::
अपनी पीड़ा
सदैव लगी छोटी,
गैरों की पीड़ा बड़ी,
ख़ुद को भूल
जी चाहता हर लूँ
सारे जग की पीड़ा! ❑

डॉ. अनीता कपूर

:: 1 ::
फिर ख़्वाहिशें
ओढ़ लीं सारी मैंने
रंगीली चादर-सी
तलाश रही
वह इंद्रधनुष
जिसने भेजे रंग।

:: 2 ::
बाँध घुँघरू
छम-छम करती
वर्षा अल्हड़ नार
कर फुहार
गाती रही नग़में
बजा जलतरंग।

:: 3 ::
आओ बना लें
वो पाँचवाँ मौसम
प्यार-भरा मौसम
बरसे जहाँ
सिर्फ़ प्यार की वर्षा
गंगा-की धारा जैसे।

:: 4 ::
अलबेली-सी
जीवन की चिरैया
किस डाल को काटे?
नोचे किस को
तितली बनी कभी
चिरैया जीवन की।

:: 5 ::
ज़िंदा रखना
अगर रिश्तों को तो
दे दो उन्हें भी साँस
न हो गणित
कोई लेन-देन का
शून्य की दरकार।

:: 6 ::
ठहरे पल
हमेशा ढोते सच
दौड़ता हुआ वक़्त
कभी भागता
खिड़की से बाहर
कभी आता अंदर।

:: 7 ::
अकेलापन
न सहेजो, अन्यथा
ज़िंदगी भुरभुरी,
अकेलापन
चमके कुंदन-सा
गर बिसारे चलो।

:: 8 ::
सिकुड़ चुके
सहमे-से वे रिश्ते
लहू सर्द शिला-सा,
ताकती राहें
पनीली सुर्ख़ आँखें
ढो रहीं सिर्फ़ साँसें।

:: 9 ::
लटके रहे
सितारों के झूमर
रात ऊँघती रही,
काँपते रहे
मेरे अधूरे ख़्वाब
चाँदनी चुप रही।

:: 10 ::
भोर का पंछी
आज फिर चुगेगा
रात के बचे दाने,
शाम को लौट
बुनेगा काली रात
फिर उन्हीं दानों से।

:: 11 ::
कवि की आँख
वेदना की धरती
से फूटतीं कोंपलें,
शब्दों में पिरो
करें काव्य-सृजन
ख़ुदा की नियामत।

:: 12 ::
कभी मौसम
सूख गए हैं सारे
कभी आँसू रूठे-से
कहानी लिखूँ
मैं, या कविता, दिल-
दरवाज़े रूठे से।

:: 13 ::
चाहे चर्च या
गुरुद्वारा हो कोई
भक्ति के वृक्ष सभी
माँगे हैं खाद
प्रेम मुहब्बत की
रब की अरदास।

:: 14 ::
पी डाला दर्द
रूह की चिमनी से
जैसे गीत-संगीत
पकड़ धुआँ
लपेट चाँदनी में
लिखा रंगीला गीत। ❑

रचना श्रीवास्तव

:: 1 ::
बंद कर दो
घर से निकलना
या परदे में रखो
फूलों की खुश्बू
हवाओं की गति को
बाँध सका है कोई?

:: 2 ::
सजती है स्त्री
पोस्टर, कविताओं
चित्र व प्रचार में,
घर-आँगन
जहाँ पूजी जानी थी
जला दी जाती वहाँ।

:: 3 ::
चाँद ने ओढ़ा
बादल का घूँघट
रात मध्यम हुई
सूर्य ने आके
उठाया घूँघट तो
उजियारा बरसा।

:: 4 ::
तारों की नोक
बहुत देर तक
टिका हुआ था चाँद
गुदगुदाया
हवा ने, तो बादल
की गोद गिरा चाँद।

:: 5 ::
जख़्मी घुँघरू
रात की पायल का
बजता ही रहा था
सुना था यह-
जमी थी महफ़िल
बादल के घर में।

:: 6 ::
सोया था चाँद
बादलों की गोद में
देखता था सपने
दुष्ट बादल
उसे रौंदता गया
अब चाँद में दाग़ था।

:: 7 ::
इन तारों में
होगा छुपा उसका
नन्हा तारा भी कहीं
सोचके यही
नभ तकती रही
सारी रात एक माँ।

:: 8 ::
झड़ते पत्ते
जीवन-वृक्ष से तो
साँसें हैं टूट जातीं,
सुनाई देता
डूबता हुआ स्वर-
'कोई तो कुछ करो!'

:: 9 ::
मृत्यु की गोद-
जहाँ आती है नींद
सदा लोरी के बिना
जाना न चाहो
पर जाना होता है
कभी न लौटने को।

:: 10 ::
जाने के बाद
लग जाती हैं गाँठें
चहकती हवा में,
तब ख़ामोश
दीवारों से झाँकतीं
कुछ बोलतीं यादें। ❑

डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा

:: 1 ::
मेरे मोहना
उस पार ले चल
चलूँगी सँभलके
दे ज्ञान-दृष्टि
मिटे अज्ञान सारा
ऐसे मुझे मोह ना।

:: 2 ::
गीत बनेंगे
बस दो मीठे बोल,
सच्चे मीत बनेंगे
पथ में तेरे
उजियारे फैलाते
नन्हें दीप बनेंगे।

:: 3 ::
उन्होंने कहा -
पंक भरा बाहर
पग रखना नहीं,
विश्वास मेरा -
खिलेंगे कमल भी
देखना कल यहीं।

:: 4 ::
मैंने ये रिश्ते
फूल जैसे सहेजे
तितली की मानिंद
छुए प्यार से
महक बाकी रही
रंग भी खिल गए।

:: 5 ::
क्यूँ सोचते हो
जो तुम दर्द दोगे
तो बिखर जाऊँगी,
ये जान लो-
धुलके आँसुओं से
मैं निखर जाऊँगी।

:: 6 ::
सुनो ज़िन्दगी!
तुम एक कविता
मैं बस गाती चली,
रस-घट भी
प्रेम या पीड़ा-भरा
पाया, लुटाती चली।

:: 7 ::
ओ रे सावन!
प्यारा मीत सबका
कली का, चमन का,
श्यामल मेघ
संग में लाया कर
यूँ ना भुलाया कर।

:: 8 ::
अभिसारिका
चंचला-सी चली है
देखो ये पुरवाई,
मिलन-गीत
मेघों ने सुनाया है,
मृदंग भी बजाया।

:: 9 ::
नीरांजनाएँ
चहक चिड़ियों की
संगीत जैसी बजें
सुकोमल-सी
कलिकाएँ मुदित
आई है ऊषा-परी।

:: 10 ::
मेंहदी लगी
हरी चूड़ियाँ हाथ
कजरा, बेंदी माथ
पग-पायल
दो नयनों का नूर
भेज दिया क्यूँ दूर?

:: 11 ::
कनक छरी
नैन-तारा तुम्हारी
दुलारी रही सदा
सुख या दुःख
सुनती हूँ आहट
मैं तो बस आत्मजा।

:: 12 ::
दिया औ' बाती
उजियारा फैलाते
जलके जीवन में
जब तलक
स्नेह भरे पावन
प्राण रहें तन में।

:: 13 ::
निहारती हूँ
अनवरत यहाँ
समय पंथ तेरा
सँवारती हूँ
सपनों की डगर
मैं भोर होने तक।

:: 14 ::
कह तो गए
'आऊँगा', यूँ मुझसे
आए ना अब तक,
राह निहारूँ
कहो तो कान्हा, तुम्हें
कब तक पुकारूँ!

:: 15 ::
नीर भरे ये
मेघा आए, गरजे
जी भर के बरसे
मैं यमुना-सी
ध्यान धरे चरण
उमड़ी औ' सिमटी।

:: 16 ::
सुनो री सखि!
आये हैं घनश्याम
मुदित मन काम।
सतरंगी है
आभा उन्नत भाल
खिली है वनमाल।

:: 17 ::
अकेली चली
हवा मन उदास
कितनी दु:खी हुई
साथी जो बने
चन्दन औ' सुमन
सुगंध सखी हुई।

:: 18 ::
मन से छुआ
अहसास से जाना
यूँ मैंने पहचाना
मिलोगे कभी
इसी आस जीकर
मुझको मिट जाना। ❑

कमला निखुर्पा

:: 1 ::
सोंधी-सी हवा
गुनगुनाके कहे-
भिगो गया मुझको
पागल मेघ
ढूँढ़ रही मैं उसे
संग मेरे ढूँढ़ो रे!

:: 2 ::
मेघों के दल
उमड़े गगन में
बज रहे नगाड़े
मस्त पवन
पपीहरा पुकारे
पी सावन आयो रे!

:: 3 ::
पूनो का चाँद
चमका गगन में
उमड़ा समन्दर,
भावों का ज्वार
फिर बहा ले चला
सपनों का संसार।

:: 4 ::
उपमेय थी
उपमानों से घिरी
बन गई अन्योक्ति
समझा अब-
तुम रहोगे श्लेष
ढके रूप अनेक।

:: 5 ::
सरिता हूँ मैं
बाँधना मत मेरे
जीवन-प्रवाह को
उफनूँगी मैं
तोड़ दूँगी किनारे
बहा ले जाऊँगी मैं।

:: 6 ::
यूँ ना कहना
सदानीरा सरिता
क्यों कहर है ढाती
छेड़ा तुम्हीं ने
भोली कुदरत को
भुगतोगे तुम ही।

:: 7 ::
कितने खेल
खेलते रहे तुम
जीतते रहे तुम
हारी हूँ मैं तो
हारके भी हँसी मैं
जीतके तुम रोए।

:: 8 ::
चलूँ मैं कैसे?
सदियों से जकड़ी
ये संस्कारों की बेड़ी
रुके कदम
गलेगा लौह अब
तपके निकलूँगी।

:: 9 ::
बिटिया बनी
बचपन में झूली
पत्नी हो इठलाई
ब्याह के आई
अधूरी थी अब भी
माँ बनी पूर्ण हुई।

:: 10 ::
दूर हटाई
मैली ये चदरिया
मिले मोहे रामजी
मिले रहीम
ख़ुद से ही मिली मैं
ख़ुदा से मिलकर। ❑

सुशीला शिवराण

:: 1 ::
आँचल-छाँव
मीठी नींद सो जाते
सपनों के गाँव से
आती परियाँ
देतीं खूब हिंडोले
वे स्मृतियों के झूले!

:: 2 ::
प्रसव-पीड़ा
भूली झट प्रसूता
देखा हसरतों से
उसका अंशी
आया नन्हा फ़रिश्ता
माहताब निशा का।

:: 3 ::
गुड्डे-गुड़िया
होता धूम से ब्याह
अलस दोपहरी
बाल-मंडली
खेला करती खेल
बसा दिलों में नेह।

:: 4 ::
मृगतृष्णा है
सजन तेरी प्रीत
दूर से भरमाए
पास जो जाऊँ
बस शून्य ही पाऊँ
यूँ मोहे भटकाए!

:: 5 ::
कारे बदरा
उमड़-घुमड़के
बरसे जो जमके
पुलकी धरा
सौंधी माटी की ख़ुश्बू
छाई मस्ती हरसू।

:: 6 ::
त्याग की मूर्त्ति
बहुत बना चुके
बना लो अब प्रिया
मेरे सपने
हों तेरे भी अपने
सुन ओ मेरे पिया!

:: 7 ::
जन्म देकर
क्यों कहा कर्मजली
रूखा-सूखा खा, पली
दे दी दान में
लो हो गई पराई
अंशी मैं, तेरी जाई!

:: 8 ::
जना बेटा तो
माँ, तू क्यों इतराई
बजी थाली, बधाई!
तेरी पीर में
भीगे बेटी के नैना
बोल! ये सच है ना!

:: 9 ::
जीवन भर
रहा ख़ानाबदोश
तृषित मेरा मन,
चाहता ठाँव
प्यार की ठंडी छाँव
जैसे माँ का आँचल।

:: 10 ::
दिए हैं पंख
तेरे हर ख़्वाब को
भूल गई खुद को
क्यों छूटता-सा
लगता है जीवन
मुट्ठी से रेत जैसे।

तुहिना रंजन

:: 1 ::
मेरे सद्गुरु
आशीष बरसाते
अंतर भिगो जाते
शीश नवाए
अँजुरी भी फैलाए
पीती जाती रस मैं!

:: 2 ::
प्रीत की पाती
लिखी होगी तुमने
उफ़!! मगर आँसू!
ऐसे निर्मम
छलका दी अँखियाँ
सब ही धुँधलाया।

:: 3 ::
स्नेह का स्पर्श
मिटा देगा अँधेरे
सब शिकवे मेरे
पास तो आओ
थाम लो मेरा हाथ
मुझे छू लो, जी जाओ!!

:: 4 ::
खिला चमन
लो फूली अमराई
पियू-पियू की तान
कोकिल की भी
देने लगी सुनाई
बसंत रुत आई।

:: 5 ::
अठखेलियाँ
बूँदों की पत्तों संग
शाखों की फूलों संग
मन बावरा
झूले में लेता पींगें
बादलों को जा चूमे।

:: 6 ::
बैरी प्रीतम
रूठा सब सिंगार
सेज भी मुरझाई
जिया तड़पे
बरखा भी जलाए
मेरे भाग जुदाई।

:: 7 ::
लहरें उठीं
दौड़ीं तट को छूने
हाथों में थामे हाथ
बढ़ीं, चीरते
समंदर का सीना
तकता था आकाश।

:: 8 ::
हँसी नवेली
शाखों से छनकर
झिलमिल किरण
स्वर्ण आभा-सी
झरती मुझपर
दमके तन-मन।

:: 9 ::
मकड़ी बुने
रेशमी ताना-बाना
फिर घात लगाए-
कीट-पतंगे
समझ नहीं पाएँ
प्राण व्यर्थ गँवाएँ।

:: 10 ::
नाचते पत्ते
लचकती डालियाँ
झूमता सारा समाँ
गाती हैं बूँदें
महक उठे फूल
तुम छुपे हो कहाँ?

:: 11 ::
मिट्टी में छुपा
था बरसों से सोया
एक अंकुर फूटा
जाग नींद से
जीने के बस अब
देखे सारे सपने।

:: 12 ::
छोटा-सा दीप
कर रहा संघर्ष
जगमगाता रहे
आँधियाँ चलें
मेघ बरस जाएँ
ज्योति बुझा न पाएँ।

:: 13 ::
नार निराली
चपला-सी चंचल
कुसुम-सी कोमल
दुर्गा से दृग
अम्बर-सा आँचल
सरिता-सी सजल।

:: 14 ::
मन-मंजीरा
अनाहत की थाप
उमंगों की तरंग
हृदय-गान
स्पंदित होती देह
थिरकती पायल।

:: 15 ::
अखियाँ रीतीं
कैसे नीर बहाऊँ?
जल हो तो जी जाऊँ
मन-गागर
सागर-सी उमड़े
आँसू में डूब जाऊँ।

:: 16 ::
स्वछन्द पंछी
छूकर आ आकाश
जाना क्षितिज पार
ऊँची उड़ान
पंखों में परवाज़
रुकना न थकना।

:: 17 ::
महाभारत
जीवन-कुरुक्षेत्र
अपने ही विरुद्ध,
गीतोपदेश
कर्म को मानो पूजा
फल ईश्वर-हाथ।

:: 18 ::
पुकारते हैं
कुछ बिछड़े साथी
यादों के आँगन से,
प्रतिध्वनित
सदियों को चीरते
छटपटाते पल।

:: 19 ::
छलककर
मदमस्त करता
सोम चाँद से जब
करे प्रेयसी
प्रणय-निवेदन
ओढ़ चाँदनी तब।

:: 20 ::
अनछुआ-सा
मन का एक कोना
सोया था अलसाया,
तुम्हें जो देखा
लेकर अँगड़ाई
ले पंख उड़ चला।

:: 21 ::
अस्तित्वहीन
पिंजरे में जकड़ी
परकटी चिड़िया
बिलबिलाती
उड़ान से वंचित
प्राण तज खो जाती।

:: 22 ::
नन्ही-सी कली
डर-डर खिलती
पंखुड़ी को खोलती
सकुचाकर
चटकीले रंग क्यूँ
भीतर छुपा लेती? ❑

डॉ. उर्मिला अग्रवाल

:: 1 ::
जलेंगे दीप
खो जाएगा अँधेरा
करो बस इतना-
भरके नेह
जला लो प्रेम-ज्योति
अपनी ज़िन्दगी में।

:: 2 ::
भटके हम
कितने द्वारों पर
अपनापन पाने,
मिल न सका
कोई अपने जैसा
न ही अपनापन। ❑

नन्ही शब्द
शुद्ध है।
कृपया कन्फर्म
करें। कहेंगे तो
करेक्ट कर
दूंगा।

शशि पाधा

:: 1 ::
ओढ़ी किसी ने
वसंती चुनरिया
लहँगा लहरिया
न रोके कोई
फूलजड़ी देहरी
आ गए साँवरिया।

:: 2 ::
लो तुम सुनो-
सजी स्वर लहरी
साँसों की रुनझुन
लो तुम पढ़ो -
चितवन लिखे जो
नैनों की सरगम।

:: 3 ::
तुम आओ तो
कह दें चाँदनी से
कहीं रुक न जाना,
तारों की वेणी
खुली भीगी अलकें
सखि तुम सजाना!

:: 4 ::
किससे कहें
अधरों पे पहरे
नयन भी न बोलें
मौन में मन
पीर भरी गठरी
किधर जाएँ खोलें।

:: 5 ::
बैरी सावन
रिमझिम बरसे
मनवा न सरसे,
चौबारे खड़ी
बिछे पथ नयना
विरहन तरसे।

:: 6 ::
कोकिल आए
मधु-सुरीले सुर
धुन कोई सुनाए
बगिया झूमे
हिंडोले पवन के
मोरे पी घर आए।

:: 7 ::
चलो भुला दें
चुभने लगें जब,
इस जग की बातें,
चलो बसा लें
इक नयी दुनिया
भरें सुख-सौगातें।

:: 8 ::
कारी बदरी
अम्बर पर छाई
तू काहे भरमाई
मन की पीर
कह दे बरसके
सोख लेगी ये धरा।

:: 9 ::
स्वाति की बूँदें
बचपन की यादें
हम कैसे भुला दें?
सीपी में मोती
बन कर पलीं वे
पिरो माला पहनें।

:: 10 ::
मन ने लिखी
नयनों ने पढ़ ली
कागद बिन पाती
तुमने छुआ
मीठी-सी सिहरन
मुझको भिगो जाती। ❑

कृष्णा वर्मा

:: 1 ::
नारी केवल
माटी हवा औ' पानी
सदा से ही निमानी
ओर ना छोर
पीहर ना सासरा
कब मिला आसरा!

:: 2 ::
अनूठी कृति
प्रकृति-वरदान
तापे जीवन आँच,
बन सुराही
बुझाती रहे प्यास
रिसे औ' दे ठंडक।

:: 3 ::
रात की चुप्पी
दिल की नगरी पे
यादें करें शासन
हरें नींद को
सुलगा के अतीत
जागने की सज़ा दें।

:: 4 ::
सुलग उठी
यादों की सीली काठ
तापती एहसास
धुँआ जलाए
पलकों के सपने
धोती खारे पानी से।

:: 5 ::
घन गरजे
पट श्यामल ओढ़
दिवस साँझ भई
प्रीत जिया में
जागी फुहार संग
भीगे नैना याद में।

:: 6 ::
हाथों में हाथ
मिला प्रणयी-साथ
अखियाँ लजा गईं,
दहके गाल
मन की बतियाँ तो
बोलें लोल लोचन।

:: 7 ::
खनके जब
बारिश की झाँझर
बजे राग मल्हार
पगला जिया
भया प्रेम दीवाना
लिपटा पी की याद।

:: 8 ::
हुई दीवानी
पवन घटा-संग
झूमके यूँ लहरी
नन्हीं बुँदियाँ
अपने काँधों पर
लेकर उड़ीं, फिरीं।

:: 9 ::
जादू बिखेरा
बूँदों ने बरसके
हुई षोडशी उर्वी
झनक उठे
शाखों पर पल्लव
खनकें ज्यों चूड़ियाँ।

:: 10 ::
आए दुर्दिन
सहज रहें हम
धैर्य न खोएँ कभी,
देखके हठ
समय शरमाए
सदा शीश झुकाए।

:: 11 ::
चेहरे पर
खिलें असंख्य पुष्प
भीतर डूँघा घुप्प,
भाग्य-किरण
दबी दुर्भाग्य-तले
न हर पाई तम।

:: 12 ::
वृक्षों की शाखें
फल-फूलों से लदीं
अहंकार से परे,
धरा की ओर
झुके पाँव स्पर्श को
आशीषों को बेताब।

:: 13 ::
आसमान ज्यों
किराए का मैदान
करता है प्रदान,
दिन औ रात
रौशनियों का मेला
स्वर्ण कभी रजत।

:: 14 ::
मुख जो खोलो
शब्दों के चयन को
दसियों बार तोलो
हों वे सहज
बोलो तो झरें फूल
चुभें ना व्यंग्य-शूल।

:: 15 ::
वंशी यूँ कहे-
लग श्याम अधर
गया जन्म सुधर
मैं तो थी बाँस
भरी हरि ने साँस
बजे सुर औ' साज़।

:: 16 ::
पगली राधा
सुन वंशी की तान
खोती जाए है प्राण
दौड़ी मधुबन
पूछें वृक्ष औ पात
कहाँ लुके हैं कांत।

:: 17 ::
माखन चोर
माथे मोर-मुकुट
पाँव में पैंजनियाँ,
मोहतीं मन
माथे बिखरी लट
अधर-मधु-घट।

:: 18 ::
ओ नटखट
चंचल चितवन
हरे मन का चैन
श्यामल तन
दमके हैं कुण्डल
किया मन बेकल। ❑

मुमताज टी. एच. खान

:: 1 ::
द्वार पे खड़े
दर्शन को तरसें
यह नैन हमारे
भरके आँसू
सावन के मेघों-से
बरसें हैं बेचारे।

:: 2 ::
छोड़ लाडली
चले जो दूर हम
तड़प उठा मन,
कुछ पल को
डगमगा गए थे
हमारे ये क़दम।

:: 3 ::
नहीं हुआ था
कलेजे का टुकड़ा
दूर कभी हमसे
पीर थी ऐसी
छलकने लगे थे
हमारे दो नयन।

:: 4 ::
रुके पल को
ख़ुद ही समझाया
बातें सभी फिज़ूल
जाना ज़रूर
कल विदा हो उसे
हमसे कहीं दूर।

:: 5 ::
उजाड़ दिया
बहुतों का चमन
बना दिया श्मशान
धर्म के नाम
ले लिये दरिन्दों ने
बेकुसूरों के प्राण।

:: 6 ::
सूनी सड़कें
बन्द पड़ी दुकानें
भूखा है मज़दूर,
नेता है सुखी
फूँका गली-चौबारा
किया सबको दुखी। ❑

प्रियंका गुप्ता

:: 1 ::
जब भी दर्द
हद से गुज़रता
रोना चाहता मन
रो नहीं पाता
ज़माने के डर से
सिर्फ़ हँसी सजाता।

:: 2 ::
परदेस में
ठण्डी हवा का झोंका
धीरे से लेता आए-
यादें पुरानी,
माँ का नर्म आँचल,
वही सुनी कहानी।

:: 3 ::
शहरी भीड़
सब कुछ मिलता
बिखरा चमचम,
नहीं मिलता-
तारों की छाँव तले
वो सपने सजाना।

:: 4 ::
नहीं डरती
आने वाले पल से,
जो ख़त्म हो जाएगा,
मेरी कविता?
बिना किसी अंत के
कितनी अधूरी है!

:: 5 ::
देर हो गई
बेटी घर न आई
घबराने लगी माँ,
भैया को भेजा-
'थामे रखना हाथ
भीड़ भरे रस्ते पे।'

:: 6 ::
कोमल हाथ
कलम को पकड़
लिखना सीख रहे,
माँ की आँखों में
सपनों का सागर,
पार उतरना है।

:: 7 ::
जीवन भर
रिश्तों की लाश ढोई
दर-दर भटकी,
काँधों पर लादे
सपनों का बैताल
जवाब नहीं मिला।

:: 8 ::
जब भी चाहा
कोई साथ न आया
अपना या पराया
फिर भी सीखा-
गुलाब-सी ज़िन्दगी
मुस्कुराकर जीना।

:: 9 ::
ढूँढती फिरे
पनियाली नज़र
बुढ़ापे का सहारा
चिट्ठी में आए
कितना बँटा-बँटा
कलेजे का टुकड़ा।

:: 10 ::
कितना चाहा
तेरा साथ निभाना
पर तुझे न भाया,
छोड़ मुझको
गैरों के काँधों पर
तुझे था पार जाना। ❑

डॉ. सतीशराज पुष्करणा

:: 1 ::
मौन जिसका
शब्दों में सज जाता
कवि धन्य हो जाता,
उसको पढ़
हर आम-खास भी
सही दिशा पा जाता।

:: 2 ::
होती है पूजा
जगती में उसकी
जो कुछ कर जाता ,
बनता वही
शिलालेख युग का
जग भी गुण गाता।

:: 3 ::
नहीं एक ही
हों सब संचालक
अब इस सत्ता के,
जनहित में
जो काम करें नित
शासक वही बनें।

:: 4 ::
काव्य-साधना
करे हर सर्जक
मानवता-हित में,
सारी धरती
हो सदा अनामय
बचे दानवता से।

:: 5 ::
सुख बरसे
मिल करें वन्दना
हम अन्तर्मन से,
सब हों सुखी
हर घर रौशन
महके चन्दन-से।

:: 6 ::
जब झूमते
फूल, पल्लव, डाली
हवा साज़ बजाए
बनें पुजारी
तब पेड़ों पे पंछी
मिल प्रभाती गाएँ। ❑

प्रगीत कुँअर

:: 1 ::
खो गए रस्ते
उजाले की खोज में
दर-दर भटके,
पाते मंज़िल
अगर सफ़र में
मिलता जो साहिल।

:: 2 ::
किया भरोसा
जिन पर हमने
वही दे गए धोख़ा
जो अनजान
हर पल हमपे
छिड़कते हैं जान।

:: 3 ::
रैन नागिन
लौटे न अब तक
हैं द्वार पर नैन
भटके कहाँ
तुम बिन अपना
उजड़ रहा जहाँ।

:: 4 ::
बढ़ी दूरियाँ
पंख कटे अपने
कैसी मजबूरियाँ
चाहे हो दूर
पर रहना मेरे
हृदय में ज़रूर।

:: 5 ::
तेरी आवाज़
गूँजती है दिल में
तेरे जाने के बाद
कैसे पुकारूँ?
बस तेरे आने की
फिर राह निहारूँ।

:: 6 ::
भागा-भागा-सा
उठा है फिर, दिन
रात भर जागा-सा
है इंतज़ार
मिलने का, चैन के
फिर पल दो-चार।

:: 7 ::
संवेदनाएँ
छोड़ आए जो पीछे
फिर कहाँ से लाएँ
करे है राज
खुलेपन का दैत्य
हम सब पे आज।

:: 8 ::
दिल के घाव
ले आए जीवन में
कैसा ये ठहराव
झूठी आशाएँ
न जाने कहाँ तक
लेकर अब जाएँ!

:: 9 ::
बहती नदी
गुज़रती कहीं से
पहुँचती वहीं पे
मंज़िल वही
बदले कई नाम
फिर भी भूली नहीं।

:: 10 ::
सबकी दुआ
पाकर भी ना कुछ
हासिल हमें हुआ
शाख़ से गिरे
टूट के जब हम
किसी ने भी न छुआ। ❑

मंजु मिश्रा

:: 1 ::
कहाँ हो कान्हा
अब आ भी जाओ ना
काटे न कटें दु:ख,
इस धरा के
अब तुम्हारे बिना
ले ही लो अवतार।

:: 2 ::
मैंने तुमको
जब-जब परखा -
तुम निकले काँच,
दोष ये मेरा
या फिर था तुम्हारा
कि तुम हीरा न थे।

:: 3 ::
आओ कर दूँ
सुबह और शाम
सब तुम्हारे नाम,
फिर बनाएँ
सपनों की तस्वीर
नाम रखें ज़िंदगी।

:: 4 ::
कुछ सपने
घूँट भर ज़िंदगी
एक दिल, दो आँसू,
बस हो गई
प्यार की शुरुआत
अंजाम ख़ुदा जाने।

:: 5 ::
आ समेट लूँ
अपनी निग़ाहों में
फिर कहीं भी रहे,
मेरा रहेगा
धड़केगा साँस-सा
मेरी धड़कनों में।

:: 6 ::
मैं और तुम
नदिया के किनारे
साथ चलेंगे सदा,
रहेंगे दोनों
एक दूजे से दूर
नियति जो ठहरी! ❑

देवेन्द्र नारायण दास

:: 1 ::
तुम आँधी-से
विद्रोही बनकर
ज़रा लड़ना सीखो
जीवन-पथ
सदा काल-चक्र-सा
तुम चलना सीखो।

:: 2 ::
पूनम-रात
फगुनाया मौसम
चूड़ियों की खनक
तृष्णा बहुत
प्यास बैठी आँगन,
तुम बोलो, कुछ मैं।

:: 3 ::
रंग-बिरंगे
जीवन के सपने
आशा दौड़ती रही
जीवन भर
सब दौड़ते रहे
हाँफते बदहवास।

:: 4 ::
धूप-गठरी
आँगन में बिखरी
लेकर आया रवि,
शीत ऋतु में
रानी बन जाती है
गर्मी में झुलसाती।

:: 5 ::
मौन-धेनु-सी
हाँफती दोपहरी
तपती हवा चले
जेठ मास की
लौट के आया नहीं
मौसम प्यार-भरा।

:: 6 ::
फूल-फूल में
वासन्ती इठलाती
उजड़े जीवन में
आशा जगाती
बहार आहट की
पीड़ मेरी कहती। ❑

□□□

◆ कोई भी छत
प्यार या विश्वास की
सर पर नहीं है,
बहुत ऊँचा
किला आलीशान है,
पर घर नहीं है।
- डॉ. मिथिलेश दीक्षित

◆ भोर का पंछी
आज फिर चुगेगा
रात के बचे दाने,
शाम को लौट
बुनेगा काली रात
फिर उन्हीं दानों से।
- डॉ. अनीता कपूर

◆ मन की पीड़ा
बूँद-बूँद बरसी
बदरी से जा मिली,
तुम न आए
साथ मेरे रो पड़ीं
काली घनी घटाएँ।
- डॉ. जेन्नी शबनम

◆ उपमेय थी
उपमानों से घिरी
बन गई अन्योक्ति
समझा अब-
तुम रहोगे श्लेष
ढके रूप अनेक।
- कमला निखुर्पा

◆ सुनो ज़िन्दगी!
तुम एक कविता
मैं बस गाती चली,
रस-घट भी
प्रेम या पीड़ा-भरा
पाया, लुटाती चली।
- डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

शिक्षा : एम.ए. हिन्दी (मेरठ विश्वविद्यालय),बी.एड्.

प्रकाशन : 'माटी, पानी और हवा', अँजुरी भर आसीस, कुकड़ूँ कूँ, हुआ सवेरा, कविता-संग्रह), मेरे सात जनम (हाइकु-संग्रह), मिले किनारे ताँका और चोका संग्रह), धरती के आँसू, दीपा, दूसरा सवेरा (उपन्यास), असभ्य नगर (लघुकथा-संग्रह), खूँटी पर टँगी आत्मा (व्यंग्य-संग्रह), भाषा-चन्द्रिका (व्याकरण), फुलिया और मुनिया (बालकथा), अनेक लघुकथाएँ अनूदित। 18 सम्पादित संग्रह। **ई-मेल :**rdkamboj@gmail.com, **मोबाइल :** 9313727493

डॉ. भावना कुँअर

शिक्षा : हिन्दी व संस्कृत में स्नातकोत्तर उपाधि, बी.एड्., पी-एच.डी. (हिन्दी), तीन विषयों में डिप्लोमा।

प्रकाशित पुस्तकें : तारों की चूनर, धूप के खरगोश (हाइकु संग्रह), साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल में विद्रोह के स्वर (शोध-प्रबन्ध), अक्षर सरिता, शब्द सरिता, स्वर सरिता (हिन्दी भाषा-शिक्षण की शृंखला), **संपादन :** चन्दनमन (हाइकु-संग्रह), भाव कलश (ताँका संग्रह), गीत सरिता (बालगीतों का संग्रह - तीन भाग) **संप्रति :** सिडनी यूनिवर्सिटी में अध्यापन

ई-मेल : bhawnak2002@gmail.com

डॉ. हरदीप कौर सन्धु

शिक्षा : बी.एससी., बी.एड्., एम.एससी. (वनस्पति विज्ञान), एम.फिल., पीएच.डी.

प्रकाशन : मिले किनारे (ताँका और चोका संग्रह), 'चन्दनमन', 'भाव-कलश' में ताँका प्रकाशित। हिन्दी-पंजाबी की अंतर्जाल-पत्रिकाओं में कविताएँ, हाइकु, ताँका तथा चोका, लघुकथा प्रकाशित। वेब पर हिन्दी हाइकु, त्रिवेणी (ताँका-चोका और माहिया), हाइकुलोक (पंजाबी-हाइकु) ब्लॉग प्रकाशित। **सम्प्रति :** सिडनी (आस्ट्रेलिया में) में अध्यापन।

ई-मेल - hindihaiku@gmail.com